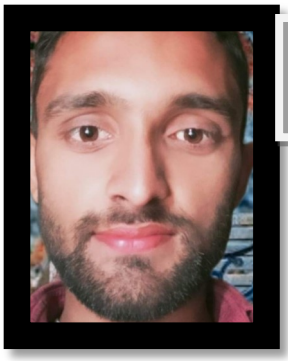

नवनीत कुमार

बिहार

किन्नर

वैभव परीक्षा देने दिल्ली जा रहा था. उसके बगल वाले सीट पर दो लड़के बैठ हंसी मजाक कर रहे थे. तभी उसी बोगी में एक किन्नर आयी उसको देख कर लग रहा था उसकी तबियत ठीक नहीं थी.कुछ देर तक खड़े रहने के बाद सामने वाले लड़कों को बोली भैया थोड़ा सा सीट दे देते तो हम भी बैठ जाते. तभी एक लड़के ने हँसते हुए कहां अरे भाई अब तो हिजड़े को भी सीट चाहिए. तभी दूसरे लड़के ने कहा हां भाई इन हिजड़ो के कारण आजकल तो ट्रेन में भी आराम से सफर नहीं कर सकते. दोनों लड़कों की बाते सुनकर किन्नर की आँखे भर गयी, उसने धीरे से कहा भाई किन्नर कहलो, हिजड़ा नहीं बोलो हमारी भी इज्जत हैं. ये सब देख वैभव से रहा नहीं गया उसने अपने पास बुलाकर उसे अपनी सीट पर बैठा लिया. और बड़े सरलता से पूछा तुम्हारा नाम क्या हैं? सरिता किन्नर ने कहाँ!

सरिता ने निराशा भरी शब्दों से हमसे पूछना चाही. आखिर समाज में हमें अलग तरीके से क्यूं देखा जाता हैं. मैं भी एक इंसान हूँ, मैं भी जीना चाहती हूँ. हिजड़ा कह कर कोई बुलाता है तो बहुत बुरा लगता हैं. उसकी बाते सुन वैभव से रहा नहीं गया. और पूछनें लगा, क्या आपका घर परिवार नहीं है? घर हैं परिवार हैं माता -पिता, भाई- बहन सब हैं. सब होने के बाद भी हमे ये समाज उनके साथ रहने नहीं देता हैं. समाज के डर से हमे अपना घर छोड़ना पड़ता हैं. सरिता ने वैभव से कहीं!

वैभव सरिता की जीवन के बारे में और जानना चाहता था. उसने फिर सवाल किया! क्या तुम्हें पढ़ना पसंद नहीं था? बिलकुल पढ़ना पसंद था. मैं वैज्ञानिक बनना चाहती थी. मेरी भावनाएं भले ही लड़कियों की तरह थी पर मेरी बद्धि विज्ञान के विधार्थी की तरह थी. पता नहीं ईश्वर ने ऐसा क्यूं मुझे बनाया न मैं इधर की बन सकी और न ही मैं उधर की बन सकी. मुझे समाज से ज्यादा कुछ नहीं चाहिए बस थोड़ी सी इज्जत हमे भी मिले. हमें भी अपना समाज का हिस्सा समझा जाए. आखिर ईश्वर ने हमारे साथ अन्याय क्यूं किया? सरिता इतना कहकर रोने लगी. वैभव को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वो सरिता को क्या जवाब दे. वैभव सोचने लगा तभी उसका स्टेशन आ गया, और उसने सरिता को दिलासा दिलाते हुए उतर गया. परीक्षा दे कर वैभव घर आ गया लेकिन उसके दिमाग में सरिता का दर्द भरी दास्तां घूम रहा था वो बेचैन था . सारे सवाल का जवाब जानने को पर पूछे किससे यही समझ नहीं आ रहा था. तभी उसके दादा जी दिखाई दिए।

वैभव ने तुरंत उनसे सवाल किया! दादा जी क्या किसी का लिंग उसकी बुद्धिमत्ता का परिचायक हो सकता हैं. 'बिल्कुल नहीं' दादा जी ने वैभव से कहा!

तो फिर क्यूं किन्नरों के साथ अन्याय किया जाता हैं? हम क्यूं उन्हें अपने से दूर सामाजिक दायरे से बाहर हाशिये पर रखते चले आ रहे हैं? उनके प्रति हमारी सोच में अश्लीलता का चश्मा क्यूं चढ़ा रहता हैं? उन्हें समाज की मुख्यधारा से क्यूं अलग रखा जाता हैं? वैभव का सवाल सुन उसके दादा जी सोचने पर मजबूर हो गए. उनके पास वैभव के किसी भी सवाल का जवाब नहीं था. वो बस वैभव का चेहरा निहारते रह गए।